एक ही समृद्धि है: उसकी याद

जपुजी का एक सूत्र है :—
सालाही सालाहि एती सुरति न पाइया।

कितनी ही स्तुति करते रहो, और कहो कि तू महान है, लेकिन तुम स्तुति करके भी दूर ही बने रहोगे। फासला कायम रहेगा। वह भगवान होगा, तुम भक्त होओगे। तुम बोलते रहोगे शब्द; और शब्दों से बीच की दूरी घटेगी नहीं, बढ़ेगी।

तुम्हारी प्रार्थनाएं वक्तव्य नहीं, श्रवण बनाना चाहिए। तुम सुनो, तुम बोलो मत। तुम चुप होओ, ताकि वह बोल सके। तुम चुप होओ, ताकि तुम उसे सुन सको।

लेकिन तुम बोलते हो। इतने जोर-जोरे से बोलते हो कि कबीर को कहना पड़ा, कि क्या तुम्हारा खुदा बहरा हो गया है कि तुम इतने जोर-जोर से चिल्लाते हो? क्या उसके कान नहीं हैं? तुम किसके लिए चिल्ला रहे हो? और जोर-जोर से चिल्लाने से क्या तुम्हारी आवाज जल्दी पहुंच जाएगी?

'स्तुति करने वाले उसकी स्तुति करते हैं, लेकिन उन्हें उसकी सुरति नहीं मिली।'

सुरति शब्द बड़ा कीमती है। यह नानक के जीवन-साधना का सार शब्द है। और सभी संत सुरति में लीन हो जाते हैं। सुरति शब्द आता है बुद्ध से। बुद्ध स्मृति शब्द का उपयोग करते हैं—उसका स्मरण। जिसको गुरजिएफ ने सेल्फ रिमेंबरिंग कहा है—आत्मस्मरण। जिसको कृष्णमूर्ति अवेयरनेस कहते हैं—एक जागरूक भाव। उसको नानक सुरति कहते हैं।

सुरति बहुत बारीक शब्द है। और समझने के लिए थोड़े से परोक्ष में से उतरना जरूरी है। एक मां खाना बना रही है। वह खाना बनाती रहती है, उसका

छोटा सा बच्चा खेल रहा है आस-पास। वह खाना बना रही है। जहां तक ऊपर से देखो, उसका सारा ध्यान खाना बनाने में लगा है। लेकिन उसकी सुरति बच्चे में लगी है। वह बच्चा कहीं गिर न जाए! वह कहीं सीढ़ी के करीब तो नहीं पहुंच गया? वह कहीं झूले से नीचे तो नहीं उतर गया? उसने कोई चीज हाथ में तो नहीं ले ली, जो नहीं खानी है? काम में लगी है। लेकिन सारे काम में ओतप्रोत एक स्मरण है, वह बच्चे का है।

मां रात सोती है। आकाश में बादल गरजें, बिजली कड़के, तो भी नींद नहीं टूटती उसकी। और बच्चा थोड़ा सा कुनमुनाए, और उसकी नींद टूट जाती है। तूफान गुजरता रहे घर के ऊपर से, मां गहरी नींद में पड़ी रहती है। लेकिन बच्चा थोड़ी सी करवट ले, तो जल्दी उसका हाथ उठ जाता है। नींद में भी सुरति है। स्मरण बच्चे का बना है।

सुरति का अर्थ है, एक सातत्य स्मरण का—मनकों में धागे की तरह। सब तुम करते रहो संसार में, सुरति उसकी बनी रहे। उठो, बैठो, जो करने योग्य है करो। भागने से तो कुछ होगा नहीं। दुकान पर जाओगे, दफ्तर में जाओगे, फैक्टरी में काम करोगे, गड्ढा खोदोगे, धन भी कमाना होगा, बच्चों की चिंता भी लेनी होगी, सारा जाल है। इस सारे जाल के बीच, लेकिन स्मरण उसका बना रहे। यह सब ऊपर-ऊपर हो, भीतर-भीतर वह हो। यह सब तुम्हारे बाहर-बाहर रहे, वह तुम्हारे भीतर रहे। नाता उससे जुड़ा रहे।

इसलिए नानक कहते हैं, संसार छोड़ कर जाने की कोई भी जरूरत नहीं। सुरति को पा लो कि तुम संन्यासी हो गए। सुरति सम्हल गयी कि सब सम्हल गया। और तुम जंगल भी भाग जाओगे तो क्या फायदा है, अगर सुरति संसार की बनी रही!

और अक्सर ऐसा होता है। लोग जंगल में बैठ जाते हैं जाकर, फिर यहां की याद करते हैं। और मन का तो यह ढंग ही है कि तुम जहां होते हो, वहां की फिक्र ही नहीं करता। जहां नहीं होते, वहां की फिक्र करता है। जब तुम यहां हो तब तुम्हें लगता है, हिमालय में बड़ा आनंद होगा। फिर तुम हिमालय पहुंच गए, तब तुम सोचते हो, पता नहीं उधर बहुत आनंद आ रहा हो, पूना में। और पता नहीं हम भटक गए, सारी दुनिया तो वहीं है। सभी तो गलत नहीं हो सकते। अब हम यहां बैठे-बैठे क्या कर रहे हैं झाड़ के नीचे? वहां भी तुम रुपए गिनोगे। वहां भी तुम हिसाब लगाओगे। वहां भी पत्नी और बच्चों के चेहरे तुम्हारे आसपास घूमेंगे। तुम रहोगे हिमालय में, लेकिन सुरति तो तुम्हारी

रहोगे हिमालय में, लेकिन सुरति तो तुम्हारी यहां लगी रहेगी।

नानक कहते हैं, रहो तुम कहीं भी, सुरति परमात्मा में हो।

स्तुति से कुछ न होगा, सुरति से होगा। क्योंकि स्तुति तो ऊपर-ऊपर होती है। सुरति भीतर-भीतर होती है। यह चिल्ला कर कहने की जरूरत नहीं कि तुम महान हो, कि मैं पापी हूं कि तुम पतितपावन हो, कि मैं भिखारी हूं और तुम दाता हो; यह कहने की क्या जरूरत? इसको चिल्लाने से क्या होगा? इसको तुम किसको बता रहे हो? किसको तुम यह समझा रहे हो?

नहीं! सुरति की जरूरत है, स्तुति की नहीं। याद रखो उसकी। वह भूले न! उसे तुम सम्हाले रहो भीतर। जैसे कि तुम्हें कोहिनूर हीरा मिल जाए, तुम उसे जल्दी से अपने खीसे में रख लो, गांठ में बांध लो। फिर तुम बाजार जाओगे, सब्जी खरीदोगे, घर लौटोगे, पत्नी से बात करोगे, लेकिन सुरति हीरे की बनी रहेगी। वह तुम्हारी गांठ में बंधा हुआ है। याददाश्त वहां लगी रहेगी। याददाश्त की चोट वहां पड़ती रहेगी। एक धीमी-धीमी भनक भीतर आती रहेगी, कि हीरा खीसे में है। तुम बीच-बीच में उसे टटोल कर भी देख लोगे—है या नहीं! खो तो नहीं गया!

ऐसे ही तुम परमात्मा को सम्हालते रहो। और बीच-बीच में टटोल कर देखते रहो। रास्ते पर चलते एक क्षण को चौंक कर खड़े होकर देख लो कि भीतर सुरति का धागा चल रहा है कि नहीं? खाना खाते वक्त एक क्षण रुक जाओ, आंख बंद करके देख लो कि भीतर उसकी याद चल रही है या नहीं?

धीरे-धीरे, धीरे-धीरे, अभ्यास गहन होता जाता है। फिर तुम सोए भी हो, तो भी उसकी याद चलती रहती है। और जब उसकी याद चौबीस घंटे चलने लगती है, तब तुमने अपने और उसके बीच रास्ता बना लिया। तब तुम्हारे और उसके बीच सेतु बन गया। अब तुम जब चाहो आंख बंद करो और उसमें लीन हो जाओ। एक क्षण में रास्ता तैयार है। इधर तुमने आंख बंद की, कि तुम उसमें लीन हुए। और जब तुम उससे लौटोगे वापस संसार में, तो ताजे, परिपूर्ण शक्ति से भरे, नए स्नान किए हुए। सद्यःस्नात! इसलिए नानक कहते हैं, हजारों तीर्थों का स्नान सुरति में हो जाता है।

'स्तुति करने वाले उसकी स्तुति करते हैं, लेकिन उन्हें उसकी सुरति नहीं है। नदी और नाले समुद्र में गिरते हैं, लेकिन वे उसको जान नहीं सकते।'

> सुरति शब्द बड़ा कीमती है। यह नानक के जीवन-साधना का सार शब्द है। और सभी संत सुरति में लीन हो जाते हैं। सुरति शब्द आता है बुद्ध से। बुद्ध स्मृति शब्द का उपयोग करते हैं-उसका स्मरण। जिसको गुरजिएफ ने सेल्फ रिमेंबरिंग कहा है-आत्मस्मरण

नदी-नाले समुद्र में गिर जाते हैं। लेकिन इतना थोड़े काफी है कि समुद्र में गिरने से कोई जान लेगा? नदी-नाले को कोई होश नहीं। गिरते समुद्र में हैं, लेकिन होश न होने से कुछ भी पता नहीं। हम भी चौबीस घंटे परमात्मा में ही गिर रहे हैं। लेकिन हमें कोई होश नहीं है। चौबीस घंटे हम उसी के आसपास घूम रहे हैं। बार-बार उसमें गिरते हैं। हर मृत्यु में हम उसी में गिरते हैं और हर जन्म में हम उसी से पैदा होते हैं, लेकिन सुरति नहीं है।

तो हम भी नदी-नालों की भांति हैं। सागर में भी गिर जाते हैं तो पता नहीं चलता कि क्या हो रहा है! होश नहीं है; बेहोश हैं, मूर्च्छित हैं। एक नशे में चल रहे हैं। जागे नहीं हैं, सोए हुए हैं। एक तंद्रा पकड़े हुए है। नदी और नाले विराट सागर में गिर कर भी वैसे ही दीन बने रहते हैं। उन्हें पता ही नहीं चलता कि क्या हो गया!

हम भी प्रतिक्षण उसी में जाते हैं और आते हैं। अगर गौर करोगे और धीरे-धीरे सुरति जगेगी, तुम पाओगे हर श्वास उसी में जाती है और उसी से वापस लौटती है। श्वास बाहर जाती है, तब तुम परमात्मा में गए। श्वास भीतर लौटती है, तब परमात्मा तुम में आया। प्रतिपल श्वास-प्रश्वास में वही छा जाता है। और तब आनंद का कोई पारावार नहीं है। तब तुम्हारे जीवन में पहली बार धन्यता की प्रतीति होगी। और तब तुम कह पाओगे परिपूर्ण भाव से, तेरी अनुकंपा है। तब तुम कह पाओगे कि धन्यभागी हूं मैं। और तब तुम्हारे जीवन में आस्तिकता की पहली आभा उतरेगी।

स्तुति करने से कोई आस्तिक नहीं होता है, सुरति से कोई आस्तिक होता है।

'समुद्र के जैसे बादशाह और सुलतान, जिनके पास पहाड़ जितने माल-धन हों, उस कीड़ी की बराबरी नहीं कर सकते जो तुझे मन से नहीं बिसुरती है।'

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालुधनु।
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि।

एक छोटी सी कीड़ी भी, एक चींटी भी, जो तुझे याद रखती है; बड़े से बड़े सम्राट, जिनके पास समुद्र जैसा विशाल धन हो, पर्वतों के अंबार हों वैभव के, वे भी एक छोटी सी कीड़ी का मुकाबला नहीं कर सकते। क्योंकि उसने परम धन पा लिया। उसने सुरति पा ली। दरिद्र से दरिद्र, सुरति के मिलते ही महान से महान सम्राट हो जाता है। और महान से महान सम्राट भी सुरति के बिना दीन और दरिद्र बना रहता है।

एक ही दरिद्रता है, परमात्मा को भूल जाना। और एक ही समृद्धि है, उसकी याद को उपलब्ध हो जाना। जिसको उसकी सुरति जग गयी, उसने सब पा लिया, जो पाने जैसा है। चाहे उसके पास कुछ भी न हो, एक लंगोटी न हो, सिर पर छाया न हो, लेकिन जिसने उसकी याद को पा लिया, उसने सब पा लिया। उसके लिए पाने को कुछ भी न बचा। और चाहे तुम्हारे पास कितने ही महल हों, धन का अंबार हो, पद हो, प्रतिष्ठा हो, भीतर तुम दरिद्र और भिखारी ही रहोगे। भीतर तुम जानते ही रहोगे उस पीड़ा को, जो दरिद्रता की है।

नानक कहते हैं, एक ही धन है। और वह है, उसकी याद। और एक ही निर्धनता है। और वह है, उसका विस्मरण।

तुम सोच लेना ठीक से। तुम धनी हो या गरीब? और जब तुम सोचो धनी या गरीब, तो अपने बैंक के खाते के हिसाब से मत सोचना। वह धोखा है। तब तुम भीतर के खाते को खोलना, और वहां देखना कि कितनी सुरति लिखी है? बस, उसी मात्रा में तुम अमीर हो। और अगर जरा भी सुरति न हो, तो समझना कि अभी तो धन की खोज भी शुरू नहीं हुई। और तुम बाहर कितना ही इकट्ठा कर लो, उससे अंततः कोई फर्क न पड़ेगा।

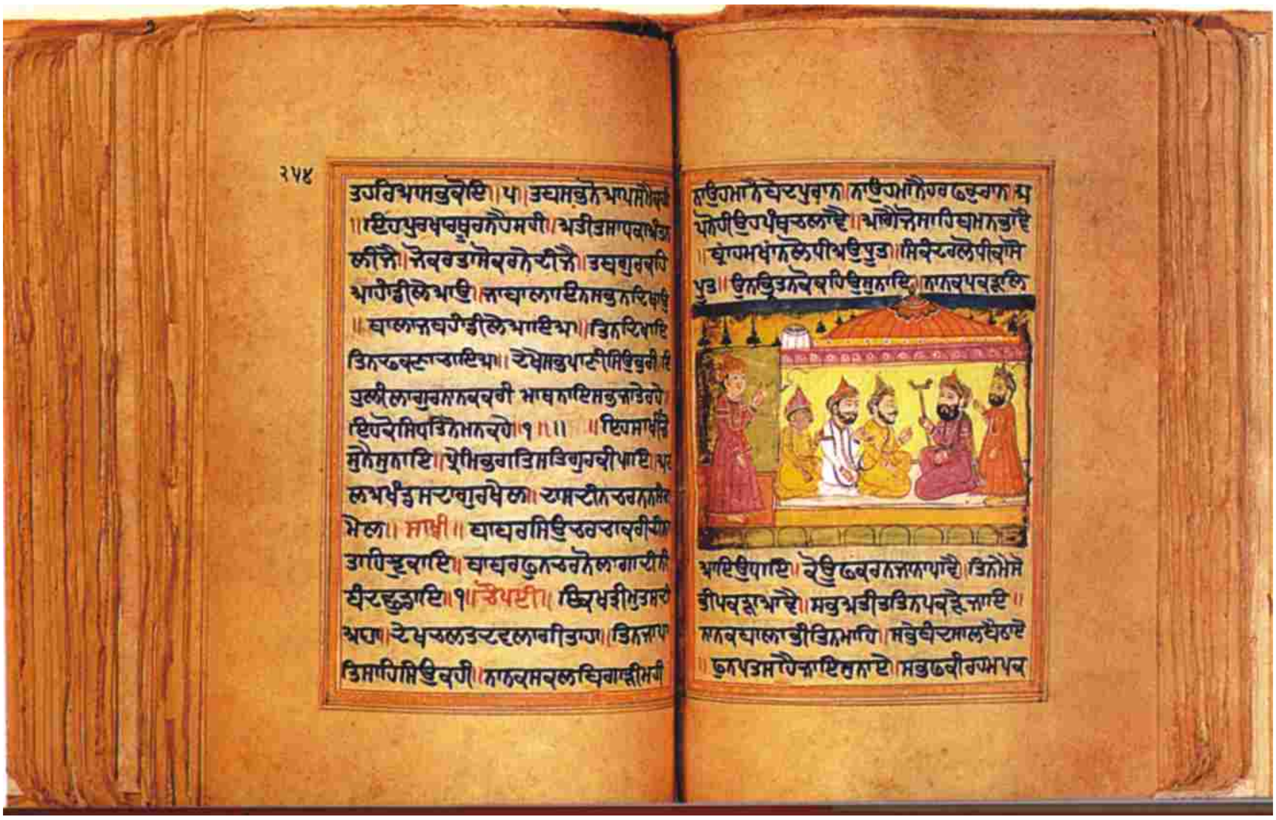

नानक कौन हैं? न धन है, न पद है, न कोई साम्राज्य है, लेकिन कितने सम्राट फीके पड़ गए! और नानक उसकी सुरति के कारण बहुमूल्य हो गए। सम्राट आते-जाते रहेंगे, नानक टिकेंगे। पद-प्रतिष्ठाएं बनेंगी और मिटेंगी, नानक का मिटना मुश्किल है

सिकंदर मरा तो उसने कहा, मेरी अर्थी को जब ले जाओ, तो मेरे दोनों हाथ अर्थी के बाहर लटके रहने देना। उसके वजीरों ने पूछा, हम समझे नहीं कारण। और ऐसा रिवाज नहीं है। हाथ तो अर्थी के भीतर ही छिपाए जाते हैं। सिकंदर ने कहा, लेकिन रिवाज हो या न हो, तुम मेरे हाथ बाहर लटके रहने देना। उन्होंने पूछा, कारण? तो उसने कहा, मैं चाहता हूं कि लोग देख लें कि मैं भी खाली हाथ मर रहा हूं। मेरे हाथों में कोई संपदा नहीं है।

सिकंदर भी दीन-हीन मर जाते हैं। बड़े शक्तिशाली अंततः नपुंसक सिद्ध होते हैं। लेकिन एक कीड़ी भी उसकी याद से भर जाए तो सिकंदरों को फीका कर देती है।

नानक कौन हैं? न धन है, न पद है, न कोई साम्राज्य है, लेकिन कितने सम्राट फीके पड़ गए! और नानक उसकी सुरति के कारण बहुमूल्य हो गए। सम्राट आते-जाते रहेंगे, नानक टिकेंगे। पद-प्रतिष्ठाएं बनेंगी और मिटेंगी, नानक का मिटना मुश्किल है। क्योंकि जिसने उसका सहारा ले लिया जो कभी नहीं मिटता, उसका मिटना असंभव हो जाता है।

तुम एक छोटी कीड़ी भी बने रहो तो कोई हर्जा नहीं; बस, उसकी याद न भूले। तुम बड़े सम्राट होने के पागलपन में मत पड़ना। क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि जितना तुम बाहर का धन इकट्ठा करते हो, उतनी ही उसकी याद भूलती है। क्योंकि बाहर का धन इकट्ठा करने में भी उसको भूलना जरूरी है। तुम उसे याद रखोगे तो बाहर का धन तुम इकट्ठा कैसे करोगे? बाहर का धन मिट्टी मालूम पड़ेगा। मिट्टी को कोई इकट्ठा करता है? जिसके पास उसकी याद है, वह बाहर की प्रतिष्ठा की चिंता ही न करेगा। क्योंकि उसमें कुछ सार ही नहीं है।

जैसे छोटे बच्चे कंकड़-पत्थर इकट्ठा करते हैं। तुम उनसे कहते हो, क्या पागलपन कर रहे हो? फेंको! ये सब कंकड़-पत्थर हैं। लेकिन उनको वे बड़े बहुमूल्य मालूम पड़ते हैं। वे चोरी-छिपे फिर उनको घर के भीतर ले आते हैं। रात मां को फिर उनके खीसे में से वे ही पत्थर निकालने पड़ते है। लेकिन यही बच्चा कल बड़ा हो जाएगा, इसकी समझ जगेगी, प्रौढ़ता आएगी, फिर यह पत्थरों को इकट्ठा नहीं करेगा। यही बात वह अपने बच्चों को कहेगा, फेंको ये पत्थर!

संसार में तुम जो इकट्ठा कर रहे हो, वह तभी तक बहुमूल्य है, जब तक सुरति की समझ नहीं जगी। जैसे ही सुरति जगी, तुम प्रौढ़ हो गए। तब एक समझ का दीया जला। उस दीए में तुम पाओगे, यह सब तो कूड़ा-करकट है, कचरा है। यह मैं क्यों इकट्ठा कर रहा था? तुम हैरान होओगे कि मैं क्यों पागल था इन सबके पीछे? यह सब पाकर मैंने क्या पाया?

यह सब अचानक ही व्यर्थ और असार हो जाएगा। सुरति के जगते ही जीवन रूपांतरित हो जाता है। एक क्रांति घटित होती है। पुराना तुम्हारा जो व्यक्तित्व था वह मर जाता है। नए का जन्म होता है। इस नए के जन्म की तलाश ही धर्म है।

इसको तुम सोचना। इसको तुम मनन करना। इसको तुम विचारना कि तुम्हारे भीतर कहीं भी सुरति के लिए थोड़ी सी कोई जगह है? कोई कोना? तुम्हारे भीतर कोई मंदिर है जहां सुरति गूंजती है? तुम्हारे भीतर सुरति का सुर चलता है? तुम्हें उसकी याद बनी रहती है? या तुम भूल-भूल जाते हो? या तुम उसे याद ही नहीं करते?

इसका अगर तुम विचार भी करने लगे, इस पर अगर तुम सोचने भी लगे, तो यह सोचना और विचारना भी उसकी सुरति बनने में कारण हो जाएगा। क्योंकि जैसे-जैसे तुम विचारोगे, आखिर तुम उसी को विचारोगे! जैसे-जैसे तुम याद करोगे, उसी की याद करोगे। तुम यह भी अगर सोचोगे कि मुझ में उसकी याद नहीं है, तो भी उसकी याद आएगी।

और यह याद आती रहे, धीरे-धीरे तुम्हारे भीतर यह चोट पड़ती रहे, तो निशान गहरा बन जाता है। और पत्थर पर भी निशान बन जाते हैं, तो यह तो हृदय है, इस पर तो निशान बन ही जाएगा।

कबीर ने कहा है, रसरी आवत जात है, सिल पर पड़त निशान।

रस्सी भी आती-जाती है कुएं की सिल पर तो निशान बन जाता है। तो सुरति की रस्सी अगर तुम्हारे हृदय पर आती-जाती रहेगी, तो पत्थर पर निशान बन जाते हैं, हृदय पर क्यों न बनेगा? हृदय पर भी निशान बन जाएंगे। और हृदय से कोमल तो इस जगत में कुछ भी नहीं है। बस! चाहिए इतना कि सुरति की रस्सी आती-जाती रहे।

– ओशो
एक ओंकार सतनाम
दसवां प्रवचन
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)